खंड 5

मीडिया और शिक्षा

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 11 शिक्षा में मीडिया का प्रभाव*

संरचना

11.0 प्रस्तावना

11.1 शिक्षा के विकास में मीडिया की भूमिका

- 11.1.1 मीडिया द्वारा उत्पन्न ज्ञान का अन्तर

11.2 शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में मीडिया का उपयोग

- 11.2.1 शिक्षा के क्षेत्र में दृश्य-श्रृव्य सहायक सामग्री
- 11.2.2 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया
- 11.2.3 प्रिन्ट मीडिया

11.3 ऑनलाइन/आभासी अधिगम

- 11.3.1 मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्सेज (मूक)
- 11.3.2 स्वयम
- 11.3.3 सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा का राष्ट्रीय मिशन
- 11.3.4 राष्ट्रीय इलेक्ट्रानिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान
- 11.3.5 नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी
- 11.3.6 शिक्षण में वार्षिक रिफ्रेशर कार्यक्रम

11.4 मोबाइल एप्लीकेशन्स

- 11.4.1 ई-पाठ्शाला
- 11.4.2 स्वयम ऐप
- 11.4.3 इग्नू स्टूडेन्ट ऐप

11.5 शिक्षा के सन्दर्भ में उपयोग की जाने वाली तकनीक और मीडिया पर फिर से ध्यान केन्द्रित करना

11.6 सारांश

11.7 मुख्य शब्द

11.8 पुनरावलोकन प्रश्न

11.9 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

11.10 अतिरिक्त ऑनलाइन संसाधन

सीखने के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप, इसके योग्य हो जाएंगे किः

- भारत में शिक्षा क्षेत्र के विकास में मीडिया की भूमिका की पहचान कर सकेंगे;
- डिजिटल पुस्तकालयों, संग्राहकों एवं सरकार की पहलों, मुफ्त अकादमिक और व्यवसायिक सामग्री का वर्णन कर सकेंगे; और
- उपयोग के लिए सूचना को पहुँचाने के लिए ऑनलाइन शैक्षणिक संसाधनों का पता लगा सकेंगे।

---

* वृषाली पाठक एवं दृष्टि कश्यप, शोधार्थी, मनोविज्ञान विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली।

11.0 प्रस्तावना

कहा जाता है कि जन संचार मीडिया जैसे प्रिन्ट मीडिया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया और नये युग के डिजिटल मीडिया का लोगों के जीवन पर गहरा प्रभाव है। वे समकालीन समाज में संदेश प्रसारित करने, विषय-वस्तु का निर्माण करने, सूचनाएं साझा करने, ज्ञान और सम्प्रेषण प्राप्त करने का एक साधन है। तीव्र गति से हो रही सामाजिक और तकनीकी प्रगति के कारण जन संचार मीडिया के विभिन्न रूप और नये युग का डिजीटल मीडिया समाज का एक अविभाज्य भाग बनता जा रहा है। पहले जनसंचार मीडिया का उपयोग वर्णनात्मक और व्यक्तिगत उपयोग के रूप में किया जाता था क्योंकि शैक्षिक विकास में मीडिया के उपयोग का कोई सुसंगत विचार नहीं था। हालांकि, प्रौद्योगिकी के आगमन और विकास के साथ, सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग और विभिन्न डिजिटल मीडिया प्लेटफार्म के आ जाने से, विद्वान, मीडिया और शिक्षा के विषय की खोज में रुचि रखने लगे हैं। जन संचार मीडिया और डिजीटल मीडिया किसी विशेष कार्य को करने के लिए विभिन्न उपकरणों का उपयोग करने की बजाए एक ही डिजिटल उपकरण के माध्यम से सूचना को संप्रेषित और प्रसारित करने के आसान तरीके हैं। मीडिया के प्रभाव और शक्ति को कम करके नहीं आंका जा सकता। जन संचार मीडिया अब नया नहीं है लेकिन नये युग का डिजीटल मीडिया इस क्षेत्र में एक नये खिलाड़ी के रूप में खड़ा है और इसका उपयोग देश में शिक्षा क्षेत्र को रूपान्तरित कर सकता है। मीडिया और डिजीटल मीडिया में लाखों और अरबों लोगों तक जल्दी पहुंचने और निर्बाध सूचना फैलाने की शक्ति है। इस प्रकार, यह दुनिया में एक महत्वपूर्ण समाजीकरण और सामाजिक परिवर्तन का एजेंट बन रहा है।

पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था अधिगम का एक अच्छा तरीका है, हालांकि, वैश्वीकरण ने ज्ञान प्राप्त करने, सीखने और कम करने के तरीके को बदल दिया है। जनसंचार मीडिया और डिजीटल मीडिया का हमारे दैनिक जीवन पर प्रत्यक्ष और महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह अधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा है और इसका उपयोग शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए किया जा सकता है। वे अधिगम की नई प्रक्रियाओं और तकनीकों के माध्यम से नई तरंगे उत्पन्न कर रहे हैं। जिसमें शिक्षार्थी की भी प्रमुख भूमिका होती है। शिक्षा क्षेत्र विकसित हो रहा है जिससे लोगों को शिक्षित करने और स्वयं को शिक्षित करने के लिए भिन्न-भिन्न उपकरणों और प्लेटफार्मों का उपयोग किया जाता है। जन संचार मीडिया, डिजिटल मीडिया और नये युग की सूचनात्मक डिजिटल प्लेटफार्म की प्रक्रिया भौतिक स्थान और समय के अवरोध के बिना कहीं भी सूचना और सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करती है। नये मीडिया और प्लेटफार्मों के उपयोग ने विशेष रूप से सामाजिक नेटवर्किंग और संगठनात्मक सम्प्रेषण के क्षेत्र में उत्पादक और रचनात्मक अधिगम के लिए नये मार्ग खोले है। लेकिन यह अभी भी शिक्षण और अधिगम के उद्देश्यों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रहा है। दुनिया के हर भाग में, डिजिटल मीडिया के उपयोग ने रचनात्मकता, उत्कृष्टता, गति और सहभागिता से हमारा परिचय कराया है और अधिगम में मनोरंजन का तत्व जोड़ा है। डिजिटल मीडिया छात्रों और शिक्षकों के बीच फल—फूल रहा है जैसाकि वे अधिगम के लिए भिन्न-भिन्न प्लेटफार्मों तक पहुँचने के लिए घर पर विभिन्न डिजिटल उपकरणों को उपयोग कर सकते हैं। इस प्रकार, अधिक लोगों को बेहतर और अधिक तेजी से सीखाने के लिए नये मीडिया प्लेटफार्म शुरू करके और उन्नत तकनीकों उपकरण लाकर शिक्षा क्षेत्र का विकास किया जा सकता है। लेकिन भारत में शिक्षा के लिए मीडिया का उपयोग अभी भी शैशवावस्था में है। इस इकाई में हम इनमें से कुछ पहलुओं की जाँच पड़ताल करना चाहेगें।

11.1 शिक्षा के विकास में मीडिया की भूमिका

मीडिया का शिक्षकों, पत्रकारों, निर्माताओं, अन्य व्यावसायियों और बच्चों के प्रशिक्षण में बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। इसने उपयोग कर्ता के लिए दोहरा दृष्टिकोण अपनाकर अधिगम और शैक्षिक अवसरों को बढ़ाने में मदद की है (प्रारंभ करने वाले की स्थिति में भूमिका निभाई जा रही है, और कभी-कभी एक शिक्षक की स्थिति में) जैसा कि पहले चर्चा की है। मीडिया द्वारा निभाई गई सबसे महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षा और सामुदायिक विकास क्षेत्र का ज्ञान है। वे अन्य लोगों की संस्कृतियों, अभिवृत्तियों, जातियों, पंथों, नृजातियता और सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि को पहचानने में मदद करते है ताकि वे एक दूसरे के साथ प्रभावी ढंग से संप्रेषण और कार्य कर सकें। इस प्रकार, मीडिया ने विभिन्न संस्कृतियों और पृष्ठभूमि के लोगों के सामने आने वाली बाधाओं से परिचित होने में मदद की है। शैक्षणिक अवसरों के विकास में इसके महत्व को कई क्षेत्रों में चित्रित किया गया है जिसकी चर्चा बॉक्स 11.1 में की गई है।

बॉक्स 11.1 शैक्षिक अवसरों को बढ़ावा देने और जागरूकता फैलाने में जन संचार माध्यमों का योगदान

जन संचार मीडिया (जैसे टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा और पत्रिका आदि) का उद्देश्य मनोरंजन था लेकिन इसका उपयोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी किया जाता है। जनसंख्या में वृद्धि और जीवन शैली के विकास ने मनोरंजन की मांग को काफी तेज कर दिया है। लेकिन ***पत्रिकायें, समाचार पत्र और लेख उन लोगों के लिए ज्ञान*** के साथ-साथ मनोरंजन का भी प्रावधान करते है जो पढ़ने में आनन्द तलाशते हैं।

मीडिया लोगों को जागरूक करता है और ***समाचार और समसामयिक मामलों*** के बारे में उनके ज्ञान को बढ़ाता है। ऐसे बहुत से व्यक्ति हैं जो विभिन्न क्षेत्रों जैसे मौसम, राजनीति, युद्ध स्वास्थ्य, वित्त, विज्ञान, फैशन, प्रौद्योगिकी, आहार और पोषण, अपराध और हिंसा, शिक्षा, उद्योग, व्यवसाय, प्रबंधन और रोजगार के सुवसरों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने में रुचि रखते हैं। यह रेडियो, टेलीविजन, सोशल मीडिया प्लेटफार्म और विभिन्न प्रकार की पत्रिकाओं और लेखों से प्राप्त किया जा सकता है।

डिजिटल मीडिया ***जनता की राजनीति के संबंध में जानकारी*** देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्हें समाचार अवगत करना और अधिसूचनाएं मिलने की संभावनाऐं रहती हैं, भले ही वे व्यक्तिगत रूप से समाचार चैनलों द्वारा संचालित अकाउंट्स का अनुपालन ना करें। राजनीति और समाचारों से संबंधित डिजीटल प्लेटफार्म पर पोस्ट, संदेश और अधिसूचनाएं मित्रों द्वारा या सोशल मीडिया पर अनुसरण करने वाले लोगों द्वारा साझा की जा सकती हैं। इसलिए, अनिच्छुक व्यक्ति भी समसामायिक समाचारों के बारे में जान सकते हैं या जानबूझकर ज्ञान प्राप्त किये बिना अपडेट प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए, डिजिटल मीडिया निष्क्रिय अधिगम की संभावनाओं को खोलता है। बोक्स (2019) ने उल्लेख किया कि मीडिया प्लेटफार्म से ज्ञान प्राप्त करने से बचना कठिन है, खासकर जब मीडिया का वातावरण समाचार से अवगत कराना, अधिसूचना और बुलेटिन के साथ प्रमुखता ग्रहण कर लेता है। लेकिन मीडिया प्लेटफार्म बेहद विखंडित हैं इसलिए मीडिया से ज्ञान प्राप्त करना इस बात पर निर्भर करता है कि कोई व्यक्ति सोशल मीडिया पे कितने समय का उपयोग कर रहा है और ये मीडिया प्लेटफार्म समसामायिक मामले राजनीति/शैक्षिक सामग्री या अन्य सूचना आदि से कितने तृप्त हैं। लोग सोशल मीडिया प्लेटफार्म से सीख सकते हैं लेकिन तभी जब वे इन प्लेटफार्म के संसर्ग में हों और इनकी सूचनाओं पर ध्यान दें। इस प्रकार, पारंपरिक और डिजिटल मीडिया की शक्ति को व्यापक और बड़े पैमाने पर माना जाता है और इसका उपयोग कम लागत पर लोगों को शिक्षित करने के लिए कुशल तरीके से किया जा सकता है।

विभिन्न प्राधिकरण, संगठन, सोशल मीडिया प्लेटफार्म और एजेन्सियों ***सूचनात्मक संदेश फैलाने के लिए मीडिया*** की शक्ति का उपयोग करती है। इसमें ***तूफान या महामारी*** के खिलाफ चेतावनी, उदाहरण के लिए कोविड-19, एड्स, एचआईवी, पोलियो), उड़ानों और ट्रेनों के आगमन या प्रस्थान में देरी आदि शामिल हो सकती हैं। मीडिया ने विभिन्न क्षेत्रों के बारे में जागरूकता फैलाने और उनका रूपान्तरण करने में सहायता प्रदान की है और उनमें से ***सार्वजनिक स्वास्थ्य*** सेवा एक है। इसने स्वास्थ्य संबंधी सूचना साझा करने का एक अनुठा अवसर प्रदान किया है जिससे स्वास्थ्य

देखभाल में सम्प्रेषण की रणनीतियों की प्रगति हुई है और टीकाकरण कार्यक्रमों की सामुदायिक अनुभूतियों में वृद्धि हुई है। सोशल मीडिया स्वास्थ्य संबंधी जानकारी साझा करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए व्यापक रूप से एक स्वीकृत मंच है। स्वास्थ्य संबंधी सूचना के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए लोगों द्वारा फेसबुक, ब्लॉग, टविटर आदि का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और ये प्लेटफार्म अन्तः पोलियो जैसी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के बारे में ज्ञान एकत्र करने के लिए महत्वपूर्ण बन गये हैं (ओर तथा अन्य, 2016)। ओब्रेगॉन और अन्य (2009) ने उल्लेख किया कि भारत और पाकिस्तान द्वारा अपने पोलियो उन्मूलन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफार्म तक पहुंच स्थापित की गई थी और पोलिया के बारे में जागरूकता फैलाने में आबादी को शामिल किया गया था।

स्रोतः Subrahmanyam, K., & Smahel, D. (2010). *Digital youth: The role of media in development*. Springer Science & Business Media.

बॉक्स 11.1 मीडिया और अधिगम के अवसरों पर इसके प्रभाव और मीडिया प्लेटफार्म के सकारात्मक प्रभावों का सारांश प्रस्तुत करती है। अध्ययनों ने इस बात का समर्थन किया है कि डिजिटल मीडिया पर सामग्री का संसर्ग, चेतावनियों, समाचारों और राजनीति जैसी सूचनाओं के मार्ग के रूप में कार्य करता है (बौलिआन और चिओचारिस, 2020)। ऑनलाइन क्षेत्र व्यक्तियों को असीमित स्रोत, प्रकार और विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ प्रदान करते हैं और वे लगातार राजनैतिक घटनाओं, समसामायिक मामलों और प्रचलित समाचार के बारे में सूचना प्रसारित करते हैं। ये प्लेटफार्म सूचना के समृद्ध स्रोत है, इसलिए, इनमें अधिगम की अनन्त संभावनाऐं हैं। लेकिन, विकल्पों की प्रचुरता और सूचना के असीमित स्रोत अनन्तः शैक्षिक और सूचनात्मक सामग्री के लिए व्यक्ति के चयन को कम कर देते हैं। इंटरनेट की मीडिया प्रकृति पुल (pull-media nature of the internet) इस बात की संभावना को कम कर देती है कि व्यक्ति इंटरनेट पर सूचनात्मक सामग्री देखेगें। अध्ययन सुझाव देते हैं कि डिजीटल मीडिया प्लेटफार्म पर लोग सामाजिक संबंधों से संबंधित सामग्री या मित्रों और परिवार द्वारा साझा की गई सामग्री में अधिक रुचि लेगें (इनोनेन, 2011)।

कुछ अध्ययनों ने डिजीटल मीडिया प्लेटफार्म द्वारा प्रदान किये गये शैक्षिक अवसरों का खंडन भी किया है। उन्होंने प्रदर्शित किया है कि वे आवश्यक रूप से व्यक्तियों के ज्ञान में वृद्धि नहीं करते हैं क्योंकि वे अधिगम के लिए आवश्यक शर्तों को पूरा नहीं करते हैः (1) पोस्ट या सामग्री जिसमें सूचनात्मक/शैक्षिक सामग्री होती है, (2) व्यक्तियों को पोस्ट और सामग्री पर ध्यान देने के लिए आन्तरिक अभिप्रेरणा (क्रुइकेमियर, 2011)। इसलिए, उदाहरण के लिएः ट्वीटर जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्म में एक संरचना है जो ''प्रेषण उन्मुख'' (एक दिशात्मक) है जिसका अर्थ है कि लोग बहुत सारी खबरें और सामग्री साझा करते हैं और फिर से ट्वीट करते हैं जो अन्ततः पत्रकारिता एकाउंट का अनुपालन नहीं करने वाले लोगों द्वारा प्राप्त किये जायेगें। एक अन्य उदाहरण फेसबुक है जो टवीटर की संरचना के विपरीत है क्योंकि कि ''द्वि-दिशात्मक '' है। इसका एल्गोरिथ्म समसामायिक मामलों और विश्वव्यापी समाचारों पर मित्रों और परिवार के व्यक्तिगत, सामाजिक मामलों के बारे में संचार का समर्थन करता है। इस प्रकार, दर्शक आमतौर पर ट्वीटर का उपयोग करने की बजाए, जो एक सूचना साझा करने वाला समुदाय है, सामाजिक उद्देश्यों के लिए इस मंच का उपयोग करते हैं। मुल्लर और सहकर्मियों (2016) ने उल्लेख किया कि लोगों को समसामयिक मामलों और समाचारों के बारे में सूचित करने की बजाए ये मीडिया प्लेटफार्म उनका ध्यान झटका सकते हैं और विरोधाभासी काम कर सकते हैं। अध्ययन ने प्रदर्शित किया कि व्यक्ति सोशल मीडिया प्लेटफार्म के माध्यम से स्क्रॉल करके ***अनुमानी सूचित महसूस*** होने की अनुभव पर आधारित अनुभूति प्राप्त करते हैं (मुल्लर तथा अन्य, 2016)। समाचार/समसामयिक मामलों से संबंधित नये शीर्षक,

पोस्ट और सामग्री को देखने से एक संज्ञानात्मक रूपरेखा सक्रिय होती है जो इस विचार से जुड़ी होती है कि इस तथ्य के बावजूद कि सामग्री बाद में पढ़ी जा रही है या नहीं, किसी ने सोशल मीडिया कुछ सूचनात्मक या शैक्षिक सीखा है। अधिकांश सोशल मीडिया उपयोगकर्ता सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर पोस्ट की गई सामग्री को नहीं पढ़ते हैं, लेकिन ऐसी सामग्री को स्क्रॉल करने से यह अनुभूति पैदा होती है कि अन्य प्लेटफार्मों की सामग्री के बारे में अधिक जानना व्यर्थ है। इस प्रकार, सोशल मीडिया प्लेटफार्म का उपयोग सूचित होने के **गलत स्वानुभविक निष्कर्ष** को बढ़ावा देता है, जो दुनिया भर में हो रही समसामयिक मामलों या घटनाओं से संबंधित ज्ञानपूर्ण सामग्री प्राप्त करने की संभावना है। पहले से ही सूचित होने की भावना सूचना के अन्य स्रोतों को हतोत्साहित कर सकती है जो वास्तव में स्वयं को अवगत करने के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान कर सकते हैं (मुल्लर एवं अन्य, 2016)।

11.1.1 मीडिया द्वारा उत्पन्न ज्ञान का अन्तर

अध्ययनों से पता चलता है कि मीडिया समाज के विभिन्न भागों के बीच ज्ञान के अन्तर को पैदा कर सकता है। ऐसे बहुत से लोग है जो कंप्यूटर, मोबाइल फोन और इंटरनेट की पहुंच की दुर्गमता के कारण डिजीटल मीडिया का कुशल उपयोग नहीं कर सकते हैं (क्रूरजर, 2009)। इंटरनेट को हमारे जीवन का महत्वपूर्ण भाग माना जाता है (विशेषकर आज के दिन और युग में) क्योंकि यह विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान की स्थापना में सहायता प्रदान करता है। लेकिन ऐसे बहुत से व्यक्ति है जिन्हें संरचनात्मक बाधाओं, तकनीकी जटिलताओं और अंग्रेजी भाषा पर कम पकड़ के कारण इस प्रणाली को संचालित करना मुश्किल लगता है (हरगिट्टा, 2019)। प्रवंचित समूहों, समाज के आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों और हाशिये के समूह के लोगों के पास अवसरों तक पहुँचने, ज्ञान प्राप्त करने और मीडिया प्लेटफार्म पर चर्चा में शामिल होने के लिए अंग्रेजी भाषा में भाषा दक्षता कौशल नहीं है (तेवथिया, 2020)। भारत एक डिजिटल राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है और विद्यालयों और कॉलेजों में प्रवेश प्रक्रियाओं सहित दैनिक जीवन की गतिविधियों के लिए आनलाइन और डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर रहा है। लेकिन, इस डिजिटल विभाजन के कारण अनेक लोग प्रवंचित स्थिति में रह गये हैं। इसलिए यह डिजिटल विभाजन एक कमी है क्योंकि डिजीटल मीडिया के लिए लोगों को सूचना प्रौद्योगिकी, मीडिया प्लेटफार्म को सीखने और संचालित करने और अंग्रेजी भाषा की आवश्यकता होती है ताकि इसका कुशलतापूर्वक प्रयोग किया जा सके (तेवथिया, 2020)। इसके अलावा अध्ययनों से पता चला है कि उच्च स्थिति के लोग मीडिया प्लेटफार्म तक अपनी पहुँच और सुपरिचय के कारण निम्नलिखित स्थिति के नागरिकों की तुलना में समाचार, समसामयिक मामलों और राजनैतिक ज्ञान आदि को जल्दी से प्राप्त करते हैं (जिलियन और हरगिट्टा, 2009; फ्रैंल एवं अन्य, 2014)। इस प्रकार, यह विषय अधिक प्रचलित हो गया और लोगों के विभिन्न समूहों के लिए मीडिया संसर्ग के अधिगम के प्रभाव पर शोध की जांच पड़ताल की जा रही है (एवलैंड एंव शेफले, 2000; सेहट्टा एवं अन्य, 2015)।

डिजिटल मीडिया और नेटवर्किंग साइटो के बढ़ते प्रसार के साथ, यह समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि सोशल मीडियाज्ञान के अधिग्रहण को भिन्न रूपेण कैसे प्रभावित करता है (यू और गिल डी जुनिगा, 2014)। पश्चिमी समाजों में लोगों ने प्रथम डिजीटल विभाजन यानि इंटरनेट तक की पहुंच पर काबू पा लिया है। हालांकि, एक दूसरे स्तर का डिजीटल विभाजन, जो लोगों के बीच मनोरंजन की बजाए सूचना प्रयोजन से इंटरनेट का उपयोग करने की असमानता है, उभर रही है। देमित्रोवा और अन्य (2014) का कथन है कि ज्ञान प्राप्ति एक माध्यम में सीखने, **अभिप्रेरणा** और व्यक्ति की क्षमता में **अवसरों** पर निर्भर है। **ओ एम ए ढांचे** (अपोचयूनिटिज, मोटिवेशन एंड एबीलिटी) ने निर्दिष्ट किया कि व्यक्ति किसी भी मंच या माध्यम से सीख सकते हैं

लेकिन ज्ञान प्राप्त करना सूचना की उपलब्धता और उस सूचना पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए आन्तरिक अभिप्रेरणा पर निर्भर करता है। इसलिए, उदाहरण के लिए, लोग सोशल मीडिया प्लेटफार्म का अनुसरण करते हैं जो उनके स्वयं के हितों के प्रतिबिंबित करते हैं, इस प्रकार समसामयिक मामलों/तथ्यों/समाचारों और अन्य सूचनाओं के बारे में सीखने की संभावना उन व्यक्तियों में होती है जो इन क्षेत्रों में ज्ञान प्राप्त करने के लिए आंतरिक रूप से अभिप्रेरित होते हैं। लेकिन सोशल मीडिया और अन्य प्लेटफार्म भी व्यक्तियों को समाचार, तथ्य या समसामयिक मामलों जैसे क्षेत्रों पर सामग्री पढ़ने पर हतोत्साहित कर सकते है, जब वे अनजाने में ऐसी सामग्री (उनके दोस्तों या परिवार द्वारा) के संसर्ग में आते हैं। यह पहले से ही ***पर्याप्त रूप से सूचित*** होने की भावना के कारण होता है। यह भावना व्यक्तियों के बीच बनती है जो धीरे-धीरे उस ज्ञान की मात्रा के लिए नकारात्मक परिणाम देती है जो व्यक्ति अन्ततः प्राप्त करते हैं। कुल मिलाकर, डिजिटल मीडिया या सोशल नेटवर्किंग साइटों के माध्यम से ज्ञान प्राप्ति की इच्छा सबसे अधिक दृढ़ता से उन व्यक्तियों में होगी जिनमें समाचारों और समसामयिक आदि, के बारे में जानने की अभिप्रेरणा है जबकि फेसबुक, इंस्टाग्राम और स्नैपचैट जैसे प्लेटफार्म विशेष रूप से उन लोगों के लिए विकर्षण का स्रोत हो सकते हैं जिनकी राजनीति समाचारों और समसामयिक मामलों जैसे क्षेत्रों में रुचि नहीं है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 1

1) शिक्षा के विकास में जन संचार माध्यमों की भूमिका का वर्णन कीजिए।

....

....

....

2) शिक्षा के क्षेत्र में डिजीटल मीडिया के क्या लाभ हैं?

....

....

....

3) शिक्षा क्षेत्र में बदलाव लाने के लिए मीडिया प्लेटफार्म में किस तरह के परिवर्तन की आवश्यकता है?

....

....

....

11.2 शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में मीडिया का उपयोग

शिक्षा में डिजिटल मीडिया की शुरुआत और परिचय के साथ विभिन्न नवाचारी शिक्षण तकनीकों और पद्धतियों का उपयोग किया गया है। संस्थान अकादमिक दृढ़ता में सुधार लाने के लिए अपनी प्रणाली को परिष्कृत कर रहे हैं। छात्रों के बीच शिक्षण प्रक्रिया को रोचक और बेहतर बनाने की प्रक्रिया में विश्वविद्यालय और विद्यालय, डिजिटल और सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं। बॉक्स 11.2 शिक्षा पर डिजिटल और सोशल मीडिया के प्रभाव के विषय पर अधिक प्रभाव से बनाती है। नई

शिक्षा व्यवस्था केवल 'चाक और बात' पर निर्भर नहीं है, कक्षाओं को पुनर्परिभाषित किया जा रहा है और शिक्षक इन नये जीवंत दृश्य संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं जो विद्यालय के बाहर छात्रों के जीवन में सामान्य हैं। छात्र भी यह स्पष्ट रूप से बता रहे हैं कि वे शिक्षक से क्या अपेक्षा करते है और वे कैसे सीखना चाहते हैं:

- अधिक अधिगम के संसाधन प्राप्त करने में सक्षम होने के लिए ऑनलाइन डिजीटल संसाधन,
- ऑनलाइन डिजीटल संसाधनों से पाठ सामग्री तक पहुँचने में सक्षम होने के लिए,
- अपनी कक्षा की गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए ऑनलाइन सामग्री का उपयोग करना; और
- किसी भी समय या स्थान पर अधिगम का होना।

बॉक्स 11.2 शिक्षा के क्षेत्र में डिजीटल और सोशल मीडिया की भूमिका

डिजिटल और सोशल मीडिया प्लेटफार्म का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है जिसका असर लोगों की जिदंगी पर भी पड़ रहा है। केवल कामकाजी पेशेवर लोग ही डिजिटल और सोशल मीडिया का उपयोग नहीं कर रहे हैं, बल्कि छात्रों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग में भारी वृद्धि हुई है। वे व्यस्कों की तुलना में अपने मित्र समूह या वेबसाइटों से ऑनलाइन सीखने से प्रेरित होते हैं। शिक्षकों और विद्यालयों द्वारा छात्रों के अधिगम, सम्प्रेषण और संलग्नता को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर टूल और मुफ्त वेब एप्लीकेशन का उपयोग करने के साथ, सोशल मीडिया का उपयोग उनकी शैक्षणिक उपलब्धता को विचलित कर रहा है। पारंपरिक अधिगम पद्धति की तुलना में, जो व्यक्तियों को अपनी अधिगम की गतिविधियों को विकसित करने और बनाये रखने के लिए कुछ अवसर प्रदान करती है, सोशल मीडिया पर आधारित अधिगम के मंच अधिगम का नियंत्रण स्वयं शिक्षाविदों के हाथों में रखते है यह इसलिए कि 21वीं सदी में प्रौद्योगिकी नाटकीय परिवर्तन ला रही है और शिक्षण संस्थान, शिक्षण के पारंपरिक माध्यमों से अधिक परिष्कृत पद्धतियों की ओर जा रहे हैं। शिक्षा में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने की प्रक्रिया विकसित हो रही है क्योंकि अब यह कलम और कागज के इर्द-गिर्द नहीं घूमती है। कुछ तरीके जिनसे डिजिटल और सोशल मीडिया ने शिक्षा क्षेत्र में सुधार किया है, नीचे दिये गये हैं:

1) पारंपरिक शिक्षा के एक भाग के रूप में सोशल मीडिया छात्रों के लिए आकर्षक है क्योंकि यह अधिगम की क्रिया में भागीदारी को प्रोत्साहित करता है, और सहभागीता अध्ययन और सामाजिक अन्तःक्रिया दोनों को बढ़ाता है।

2) आधुनिक समय की कक्षाएं चिरस्थाई आनंद प्रदान करती है क्योंकि इसने शिक्षार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों को स्मार्ट कक्षाओं के माध्यम से टीमवर्क का प्रबंधन करने और एक दूसरे के साथ मजबूत सम्प्रेषण करने में सक्षम बनाया है।

3) सोशल मीडिया प्लेटफार्म विभिन्न प्रकार के उपकरण प्रदान करते हैं जिनका शिक्षार्थी अपनी व्यक्तिगत अधिगम शैली के अनुरूप सर्वोत्तम रूप से मिश्रण और मिलान कर सकते हैं, और अपनी अकादमिक सफलता को बढ़ा सकते हैं।

4) यह लोगों के साथ संगठन बनाने में भी मदद करता है, और छात्रों को नेतृत्व कौशल विकसित करने, कार्यक्रम आयोजित करने आदि में सहायता करता है जो सामाजिक परिवर्तन और लोकतांत्रिक भागीदारी को बढ़ावा देता है।

5) लोगों के लिए सामाजिक नेटवर्क का उपयोग करके प्रोजेक्ट कार्य के लिए विभिन्न भौगोलिक पृष्ठभूमि के लोगों के साथ मिलकर काम करना भी आसान है। उदाहरण के लिए, उनके लिए सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर समूह बनाना आसान है या यहाँ तक कि नीयत कार्य के संबंध में इनपुट का आदान-प्रदान करने और सूचना वितरित करने के लिए हेशटैग (#) का उपयोग करना भी आसान है।

6) डिजीटल और सोशल मीडिया आधारित सम्प्रेषण और अधिगम में वृद्धि हो रही है और इसके प्रभाव ने मीडिया प्लेटफार्मों के साथ-साथ स्कूल, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में बेहतर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के साथ सुपरिचय को बढ़ाया है।

THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

7) ये मंच कक्षा के बाहर शिक्षकों और मित्रों के साथ जुड़ाव बढ़ाते हैं क्योंकि वे कक्षा के बाहर के एक समूह के रूप में सम्प्रेषण कर सकते हैं और विद्यालय कार्यक्रम या अन्य कार्यक्रमों की योजना बना सकते हैं।

डिजीटल मीडिया का छात्रों पर भी **नकारात्मक प्रभाव** पड़ता है और वे सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर काफी समय बरबाद करते है। शिक्षा पर मीडिया के प्रभाव के बारे में सार्वजनिक जागरूकता का अभाव है। इन प्लेटफार्मों पर प्रसारित होने वाली भाषा और उसकी अशुचिता, अशिष्टता, अश्लीलता स्कूली बच्चों के लिए परेशान करने वाली है और उचित नहीं है। इसके अतिरिक्त, कार्यक्रम में शिक्षक, स्कूल प्रशासक या यहाँ तक कि उनके मित्र समूह की चेतावनी के बिना सोशल मीडिया पर सामग्री को डाउनलोड करना और पुर्नप्राप्त करना बेहद आसान है। इस प्रकार, जिस लोकप्रियता और गति से सूचना प्रकाशित की जाती है और डिजिटल प्लेटफार्म पर बनाई जाती है, उसने छात्रों के बीच एक लापरवाह रवैया पैदा किया है। डिजिटल प्लेटफार्मों के कुछ नकारात्मक प्रभावों का उल्लेख नीचे किया गया है:

1) वे जीवन में अपने वास्तविक लक्ष्य से विचलित होते जा रहे है और सोशल मीडिया के अभ्यस्त बन रहे हैं।

2) डिजिटल प्लेटफार्म पर आसान पहुंच के कारण सोशल और डिजीटल मीडिया प्लेटफार्म पर निर्भरता बढ़ रही है जिसने उनकी सृजनशीलता और अधिगम की प्रक्रिया को कम कर दिया है।

3) सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग उनके सम्प्रेषण कौशल को विकृत कर रहा है क्योंकि वे आमने सामने की अन्तःक्रिया की तुलना में स्क्रीन के सामने अधिक समय बिता रहे हैं।

स्रोतः Boateng, R., & Amankwaa, A. (2016). The impact of social media on student academic life in higher education. *Global Journal of Human-Social Science*, *16*(4), 1-8.

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 2

1) ओ एम ए ढांचा क्या है?

....

....

....

2) मीडिया किसी व्यक्ति की सूचना के विकल्प को कैसे कम कर सकता है?

....

....

....

3) छात्रों के शैक्षणिक जीवन पर सोशल और डिजीटल मीडिया के प्रभाव का अन्वेषण कीजिए।

....

....

....

11.2.1 शिक्षा के क्षेत्र में दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री

ये ***श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री*** प्रभावी उपकरण हैं जो अधिगम की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करते हैं और निरूपण के माध्यम से अधिगम की प्रक्रिया में योगदान देकर मन को अपील करते हैं। उन्हें बहु-संवेदी सामग्री भी कहा जाता है क्योंकि कि वे पूरक उपकरण है जिनके द्वारा शिक्षक, एक से अधिक संवेदी नेटवर्क के अनुप्रयोग के

माध्यम से अवधारणाओं और व्याख्याओं को स्पष्ट करने, स्थापित करने और उन्हें सह-संबंधित करने में सक्षम होते हैं। वे रंग, चाल या रिकार्ड किये गये संदेशों या यहां तक कि ऐसी सामग्री के उपयोग के माध्यम से छात्र को प्रोत्साहित करते हैं जो शिक्षार्थी की इच्छा और रुचि को आकर्षित करता है (नाइजी, 2016)। कक्षाओं में दृश्य -श्रव्य सहायक साधनों का उपयोग, संरचित शिक्षण की उपलब्धि में सहायता करता है। दृश्य -श्रव्य सहायक साधनों के निम्न लाभ हैं:

1) यह विधि पारंपरिक एक तरफा सम्प्रेषण से बचने में मदद करेगी जो इसकी विशेषता है और इसे जटिल प्रत्यक्ष अन्तवैयक्ति संप्रेषण के रूप में उचित रूप से उपयोग किया जा सकता है।

2) यह छात्रों को यथार्थवादी अनुभव प्रदान करने में सहायता करता है जो ध्यान लगाने और एकाग्रता के निर्माण में सहायक है। साथ ही साथ घटना को समझने में मदद करता है।

3) यह सोच और समझ को उद्दीप्त करने में सहायक है।

4) श्रव्य -दृश्य सहायक साधन कक्षा के उद्देश्यों को बढ़ाते हैं और छात्रों की विषय के बारे में जानकारी को प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के अतिरिक्त तरीके प्रदान करते हैं।

5) वे शिक्षक द्वारा प्रस्तुत किये गये ज्ञान को मूर्त रूप देते हैं और अधिगम के अनुभव को ऊर्जावान बनाने में सहायक है।

शिक्षक जानते हैं कि वे कक्षा में सबसे महत्वपूर्ण सहायक सामग्री में से एक हैं क्योंकि यह कक्षा को प्रभावी, सहज और मनोरजक बना सकता है। वे विभिन्न शिक्षण और प्रशिक्षण स्थितियों में व्यक्तियों और समूहों क बीच विचारों के सम्प्रेषण में सहायक हैं। **कार्टर वी गुड** ने दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री को इस रूप में परिभाषित किया है कि जो अधिगम की त्रिकोणीय प्रक्रिया, अभिप्रेरणा, वर्गीकरण और उद्दीपन, को पूरा करने में सहायता करता है। प्रभावी महत्वपूर्ण पाठ योजनाएं और गतिविधियाँ बनाने के लिए शिक्षक विभिन्न वीडियो का उपयोग करते हैं। यह एक कठिन कार्य है लेकिन उन्हें दृश्य-श्रव्य सहायक साधनों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए जो इस प्रकार हैं:

1) सहायक सामग्री को छात्र की *आवश्यकता और परिपक्वता के स्तर* से मेल खाना चाहिए।

2) विद्यार्थी को सहायक सामग्री को उस *विषय वस्तु से जोड़कर* देखने में सक्षम होना चाहिए जो शिक्षक द्वारा पढ़ाई जा रहीं हैं।

3) उपयोग की जाने वाले सहायक सामग्री, अवलोकन और चर्चा को प्रोत्साहित करके, शिक्षार्थी के सभी संवेदी अंगों को जगाकर, कक्षा में *छात्र की भागीदारी को अपील करने और प्रोत्साहित करने में सक्षम* होना चाहिए।

4) उपयोग की जाने वाली सहायक सामग्री *वास्तविक जीवन के उदाहरणों* से मेल खानी चाहिए ताकि उनमें संबंध स्थापित हों।

5) शिक्षण के दौरान *उपयुक्त समय* पर सहायक सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए।

6) कक्षा का सहायक सामग्री से परिचय कराने से पहले छात्र को *समस्या और चर्चा के संभावित क्षेत्रों* के बारे में बताया जाना चाहिए।

ओयेसोला (2010) ने सुझाव दिया कि दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री के प्रभावी उपयोग के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए:

1) दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री को चलाने के लिए उपयोग किये जाने वाले प्रोजेक्ट या लैपटाप को *इस तरह से रखा जाना चाहिए कि सभी छात्र देख सकें*।

2) शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग *विशिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त* करने के लिए किया जाना चाहिए जिसका उल्लेख छात्रों को सहायक सामग्री की प्रस्तुति से पहले किया जाना चाहिए।

3) छात्रों का ध्यान आकर्षित करने के लिए शिक्षण सहायक सामग्री का *निपुणता और कुशलतपूर्वक* उपयोग किया जाना चाहिए।

4) सहायक सामग्री की *तकनीकी गुणवत्ता* अच्छी होनी चाहिए।

5) *श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री के उपयोग की आवृत्ति* को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

हाल के समय में दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री, जैसे कि यू-ट्यूब पर वीडियो का उपयोग शैक्षिक अवधारणाओं को समझाने में सहायक है। बाक्स 11.3 में कक्षा में यू ट्यूब जैसी दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री के उपयोग के बारे में विस्तार से बताया गया है।

बॉक्स 11.3 कक्षा में यू–ट्यूब

उत्पादन की लागत होने के कारण श्रव्य–दृश्य स्रोत एक पारंपरिक शिक्षात्मक वितरण माध्यम के रूप में उभरे हैं। ये निर्देशात्मक सहायक सामग्री वीडियो बनाने और विकृत करने के लिए एक कैमरा, एक कंप्यूटर तक पहुँच की अनुभूति देती है। शिक्षार्थियों का एक नेटवर्क बनाने के लिए वीडियो को असानी से कक्षा में लाया जा सकता है। शोधकर्ताओं ने ऑनलाइन अधिगम के लिए, शिक्षकों को उनके अध्यापन संबंधी डिज़ाइन और वीडियो स्ट्रीमिंग संसाधनों के विकास में मदद करने के लिए व्यावहारिक उपकरणों को प्रदान करने के लिए **'थ्री आई फ्रेमवर्क'** नामक एक नेटवर्क विकसित किया किया यानि **ईमेज, इंटरेक्टिविटी और इन्टीग्रेशन** (छवि, अन्तर्क्रियाशीलता और एकीकरण)। इस ढांचे के साथ उनका लक्ष्य वीडियो की भूमिका की समझ प्रदान करना और इसे एक प्रदर्शन उपकरण से एक अधिक केन्द्रित नेटवर्क अधिगम उपकरण में बदलना था।

यू-ट्यूब का उपयोग करने की रणनीतियां:

वीडियो पाठ योजना के लोकप्रिय स्रोत बन रहे हैं, वे सूचना के महत्वपूर्ण स्रोत हैं क्योंकि सच्चे जीवन की सूचना' जैसे वीडियो होना आवश्यक है क्योंकि यह कक्षा को प्रेरित करता है और इसे और अधिक रोचक बनाता हैं। शिक्षकों ने कहा है कि वे दो कारणों से वीडियो का उपयोग करते हैं – (1) अपनी सामग्री की संवृद्धि के लिए और (2) फोटो और वीडियो जैसी चीजों पर नवीनतम् सूचना प्राप्त करने के लिए।

कक्षा में एक शिक्षात्मक उपकरण के रूप में यू-टयूब के उपयोग को उपयुक्त बनाने के निम्नलिखित तरीके हैः

1) शिक्षण उद्देश्यों के लिए उपयोग किये जाने वाले एक से चार मिनट के बीच के लघु वीडियो आदर्श होते है।

2) यू-ट्यूब वीडियो सूचनात्मक, हास्यात्मक, रोचक और आकर्षक होते हैं और छात्र उन्हें वरीयता देते हैं क्योंकि वे नियमित रूप से इस मंच का उपयोग करते हैं।

3) यू-टयूब वीडियो को विराम के साथ छोटे खंडों में चलाया जा सकता है, जिससे छात्र प्रश्न पूछ सकते हैं या उस सामग्री के बारे में आलोचनात्मक रूप से सोच सकते हैं जिसको उन्होंने अभी-अभी देखा है।

4) छात्रों को वीडियो देखते समय नोट्स लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। वीडियो को फिर से चलाया जा सकता है और शिक्षक और छात्रों के बीच नोट्स पर चर्चा की जा सकती है।

5) शिक्षक बीच में वीडियो को रोक सकते हैं और छात्रों की वीडियो की सामग्री पर चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

6) शिक्षक को वीडियो देखते समय छात्रों की जिम्मेदारी देनी चाहिए ताकि सामग्री को स्पष्ट और सार्थक बनाने के लिए प्रशिक्षक वीडियों के अनुरूप प्रश्नों को उठा सके।

7) छात्रों के लिए सामग्री को रोचक और आकर्षक बनाने के लिए वीडियो में गतिविधियां हो सकती है।

8) वीडियो से सूचना को सारांश रूप में रखने के लिए, शिक्षक को वीडियो पूरा होने के बाद प्रश्नों द्वारा आगे की कार्यवाही करनी चाहिए।

भले ही यू-ट्यूब का उपयोग नई अवधारणाओं को पेश करने, सूचनाओं के प्रसार करने और पाठों को पूरा करने के लिए किया जाता है, लेकिन अध्ययनों का कहना है कि ***यू-ट्यूब से वीडियो का उपयोग करते समय शिक्षकों को सतर्क रहना चाहिए*** (डाउनस और बिशप, 2012)। उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इस मंच की सामग्री विश्वसनीय, सटीक और सार्थक और उनकी शिक्षण सामग्री का समर्थन करती है। इसके अलावा, कॉपीराइट और ऑनलाइन सामग्री प्रोटोकोल विस्तृत, भ्रमित करने वाले और कठिन हो सकते हैं क्योंकि वे प्रत्येक विद्यालय/विश्वविद्यालय नियमों के अनुसार भिन्न होते हैं। इस प्रकार, शिक्षकों को इन नीतियों के बारे में अच्छा जानकार होना चाहिए और उन्हें अपनी कार्य विधियों के बारे में जागरूक होना चाहिए। एक और चुनौती यह है कि वीडियो अविश्वसनीय और खोजने में मुश्किल हो सकते हैं, इस प्रकार शिक्षकों को इस बारे में सतर्क रहना चाहिए और उनके पास एक दूसरी पूर्ति करने वाली योजना भी होनी चाहिए।

स्रोतः June, S., Yaacob, A., & Kheng, Y. K. (2014). Assessing the use of YouTube videos and interactive activities as a critical thinking stimulator for tertiary students: An action research. *International Education Studies*, *7*(8), 56-67.

11.2.2 इलेक्ट्रानिक मीडिया

वीडियो रेडियो टेलीविजन जैसे इलेक्ट्रोनिक मीडिया का भी लोगों को शिक्षित करने में गहरा प्रभाव पड़ता है। ये माध्यम इतने प्रभावी होते है कि लोग बिना किसी जांच या सत्यापन के मीडिया की बातों को सुनते हैं। दुनियाभर में हर जगह से पर्याप्त सीखने के लक्ष्य के साथ व्यक्तियों को प्रशिक्षित करके ये माध्यम असाधारण रूप से अच्छी तरह से काम कर रहे है। टेलीविजन, रेडियो और अन्य इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने लोगों को दुनिया के विभिन्न विषयों, संस्कृतियों और विषय वस्तुओं के बारे में जानने में मदद की है। उदाहरण के लिए, रेडियो सदियों से विकसित हुआ है और उसने शिक्षा के क्षेत्र में एक आवश्यक भूमिका निभाई है। इस माध्यम की तात्कालिकता, सुगमता और सरलता विशेष रूप से ग्रामीण भारत में एक सफलता के रूप में उभरी है। यह जन संचार का एक पसंदीदा माध्यम रहा है क्योंकि इसे आम, आदमी और बुद्धिजीवी समानरूप से आसानी से समझ लेते हैं। इसका उपयोग अनौपचारिक शिक्षा व्यवस्थाओं में और ज्यादातर उन लोगों के लिए जो विद्यालय छोड़ चुके हैं, जो लोग पढ़-लिख नहीं सकते हैं, किसान, आदि के लिए किया गया हे। पारम्परिक शैक्षिक व्यवस्था में, प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए मुद्रित पाठों की सहायता के साथ रेडियो का उपयोग किया जाता था।

एक ओर इलेक्ट्रोनिक मीडिया जिसे निरंतर अधिगम के लिए एक उपकरण के रूप में, लेकिन एक अंतहीन विचलन के रूप में माना जाता है, वह टेलीविजन है। यह शिक्षा के लिए एक अत्यंत सफल माध्यम बन गया है। लेकिन यह दैनिक जीवन में पाई जाने वाली गहराई और ''अस्तित्व'' को अर्थ प्रदान करने में विफल रहता है। लेकिन

फिर भी, यह एक व्यक्ति को श्रव्य और दृश्य सहायक सामग्री प्रदान करता है और यह रेडियो की तुलना में अधिक प्रभाव डालता है। इस माध्यम ने व्यक्तियों के दृष्टिकोण को बदल दिया है क्योंकि वे उन लोगों की तुलना में अधिक जागरूक और अधिक जानकारी पूर्ण हो गये हैं जो टेलीविजन नहीं देखते हैं। इसके अलावा, ऐसे प्रमाण हैं जो मूल्यों के निर्माण पर टेलीविजन वृत्तांतों के प्रभाव के बारे में पाये गये हैं (क्रिजनेन और मिजेर, 2005)। मीडियो की कहानियों और टेलीविजन कहानियों में भारी नैतिक शक्ति होती है क्योंकि वे ''कल्पित स्थिति' से परे दुविधाओं और विभिन्न स्थितियों की चर्चा के लिए अवसर प्रदान करती हैं। टेलीविजन देखना शैक्षिक हो सकता है जब शिक्षार्थी कल्पना की वास्तविकता से अलग कर देख सकता है और जब वे काल्पनिक कहानी और वास्तविक कहानी के बीच भेद कर सकते हैं। इसके अलावा बच्चों के लिए, शिक्षक या देखभाल करने वाले को उनके साथ टेलीविजन देखने का प्रयास करना चाहिए। उन्हें उनके द्वारा देखी जा रही सामग्री पर सवाल उठाकर या टेलीविजन पर ऐसी सामग्री का चयन करके जो उनके विकास को उद्दीप्त करती है। उन्हें प्रभावित करने की अपनी क्षमता पर भी विश्वास दिखाना चाहिए। टेलीविजन की सामग्री का बच्चों पर बहुत बड़ा शैक्षिक प्रभाव पड़ता है क्योंकि मीडिया के उपयोग का प्रारूप जीवन भर एक समान रहता है। इस प्रकार, शिक्षकों, माता-पिता को कार्यक्रमों के शैक्षिक प्रभाव पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जिन्हें शिशु, या छोटे बच्चे देखते हैं। बच्चों पर टेलीविजन के शैक्षिक प्रभाव का उल्लेख नीचे किया गया है (वाल्डीविया एवं अन्य, 2012):

1) टेलीविजन स्क्रीन को देखने की अवधि में आयु के साथ वृद्धि होती है क्योंकि बच्चे जीवन के पहले पाँच वर्षों के दौरान चुनिंदा रूप से अपना ध्यान केन्द्रित करने की अपनी क्षमता पर अधिक नियन्त्रण प्राप्त करते हैं।

2) टेलीविजन से सीखना, बच्चों के लिए आकस्मिक और कठिन कार्य है। बच्चे अपनी संज्ञानात्मक क्षमताओं, वास्तविक दुनिया के ज्ञान शैक्षिक और मनोरंजक सामग्री का एकीकरण देखने की संज्ञानात्मक मांगों को कम करेगा और बच्चों की समझ को मजबूत करेगा।

3) नौ महीने के आसपास के बच्चे नियमित रूप से टेलीविजन के संसर्ग में रहते हैं और प्रतिदिन औसतन एक से दो घंटे टेलीविजन का उपभोग करते हैं। यद्यपि शिशुओं और छोटे बच्चों में वीडियो की न्यूनता होती है, जिसका अर्थ है कि वे एक समकक्ष जीवन प्रदन्त से सीखने की तुलना में टेलीविजन से अधिगम् में कभी प्रदर्शित करते हैं। लेकिन टेलीविजन पर दोहराई जाने वाली सामग्री उन्हें सूचना को पढ़ने के अधिक अवसर प्रदान करके विषय-वस्तु के अधिगम में सहायक हो सकती हैं।

4) देखभाल करने वालों और शिक्षक, मौखिक वर्गीकरण करने में मदद कर सकते हैं यानि वे जो सामग्री देख रहे हैं, वह उनके साथ देखकर या मौखिक रूप से दोहराकर। यह बच्चों को स्क्रीन पर महत्वपूर्ण घटनाओं पर उजागर करके देखने के अनुभव को बेहतर बनाने में सहायक होता है। शोध ने प्रदर्शित किया है कि जिन माता-पिता और शिक्षकों ने स्क्रीन पर वस्तुओं का वर्गीकरण किया (उदाहरण के लिएः वह एक कटपुतली है या इसका रंग हरा है) और अपने बच्चों से सवाल किये (उदाहरण के लिएः वह आकार क्या है), उनमें बच्चों की टेलीविजन साथ देखते हुए कार्यक्रम पर बेहतर ध्यान और प्रतिक्रिया हुई थी।

5) शिक्षकों और माता-पिता को ऐसी सामग्री का चयन करना चाहिए जिसमें वास्तविकता का संवर्धन हो, यानि सेट डिजाइन में चमकीले रंग, एनीमेशन का

उपयोग, कठपुतली और बाल पात्रों जैसी विशेषताएं हों, ताकि बच्चा अधिक ध्यान से उनसे अपना संबंध जोड़ सके।

6) पांच-छः वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों में हास्यपूर्ण सामग्री कार्यक्रम के आकर्षक होने के साथ-साथ ध्यान और सूचना अधिग्रहण को बढ़ा सकती है।

7) चार साल की उम्र तक के बच्चे सिनेमा के संग्रथित चित्र (मोंताज) यानि पात्रों के परिप्रेक्ष्य, समय और स्थान के परिवर्तन को समझ सकते हैं। वे सरल परिवर्तन दृश्यों, दृष्टिकोण और कैमरा शॉट की व्याख्या कर सकते हैं जो स्पष्ट रूप से नहीं दिखाए जाते है लेकिन दर्शकों के लिए निहित होते है। ये प्रगति बच्चे की समय और स्थान में रूपान्तरण को मूल्यांकन करने की क्षमता में सहायक हो सकती हैं और अपने और दूसरों के मत और अद्वितीय दृष्टिकोण के बारे में जागरूकता को बढ़ाती है।

11.2.3 प्रिन्ट मीडिया

मुद्रित पाठ्य पुस्तकें, लेख और कक्षा के 'हैंड-आउट्स' में इंटरनेट से जुड़ी स्क्रीन, दृश्य-श्रव्य सामग्री और गेम्स जैसी चमक नहीं होती है, जो शैक्षिक अध्यापन पर डिजीटल मीडिया के प्रभाव का सुझाव देती है। तीव्र और कुशल सूचना के लिए निरंतर और लंबे समय तक कड़ी मेहनत के कारण समाचार पत्रों सहित प्रिन्ट मीडिया की स्थापना हुई। आज भी 2 अरब 30 करोड़ लोग नियमित रूप से प्रिन्ट में अखबार पढ़ते हैं जो इंटरनेट का उपयोग करने वाले या टेलीफोन और लैपटाप पर सामग्री तक पहुंच की क्षमता रखने वाले लोगों की संख्या से अधिक है।

समाचार पत्र एक ऐसा स्रोत है जिसमें नवीनतम जानकारी होती है और इसे स्थानीय, राज्य और वैश्विक स्तर के मुद्दों पर ज्ञान का खजाना माना जाता है। यह पढ़ने में रुचि पैदा करने और स्व-शिक्षा में सहायक सामग्री के रूप में एक मूल्यवान स्रोत हैं और वे छात्रों के लिए विशाल सामग्री एवं ज्ञान के स्रोत हैं। वे बच्चों में विशिष्ट विषयों और मुद्दों से संबंधित विशिष्ट पठ्न रुचियों के विकसित करने में सहायक हो सकते हैं। समाचार पत्रों के लेखों, स्तम्भों और समाचारों का उपयोग हमेशा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने और छात्रों को राजनीति, जनसंपर्क, वाणिज्य और कानून आदि कुछ विषयों में विशेषज्ञता का अवसर प्रदान करने के लिए किया जाता है। 21वीं सदी में समाचार पत्रों के महत्व और उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि प्रौद्योगिकी के तेजी से विकास और सूचना के प्रवाह के साथ, बहुत सारी जानकारी असत्यापित और झूठी है। इस प्रकार, समाचार पत्र, लेख और पुस्तकें हमें सत्यापित प्रसामाजिक सूचना प्रदान करती हैं क्योंकि वैध स्रोतों के माध्यम से कठोर शोध और पुष्टि के बाद प्रकाशित होती हैं। यह सूचना के सबसे विश्वसनीय स्रोतों में से एक है और इसने आधुनिक समाज में लोगों के सीखने, सोचने और कार्य करने के तरीके को आकार प्रदान किया है। अध्ययनों ने उल्लेख किया है माध्यमिक और उच्च विद्यालय के छात्रों के लिए शिक्षण और अधिगम के संसाधनों के लिए समाचार पत्र एक महान और मूल्यवान स्रोत है। वे बच्चों की सृजनशीलता, बुनियादी कौशल, व्यक्तित्व अभिवृत्ति, व्यवहार और पढ़ने एवं लिखने की क्षमता को विकसित करते हैं। इस प्रकार, प्रिन्ट मीडिया ने शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है क्योंकि इसने शिक्षार्थियों को समग्र रूप से शिक्षिक करके, मस्तिष्क को प्रबुद्ध करके और लोगों को तर्कसंगत, नैतिक और सामाजिक रूप से बेहतर बनाकर अधिगम की प्रक्रिया में सहायता की है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 3

1) सोशल मीडिया प्लेटफार्म के नकारात्मक प्रभाव क्या है?

....

....

....

2) कक्षाओं में दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री का उपयोग करने के लिए क्या ध्यान में रखा जाना चाहिए?

....

....

....

3) शैक्षिक क्षेत्र में रेडियो और टेलीविजन का क्या प्रभाव है?

....

....

....

4) क्या शैक्षिक विकास के लिए समाचार पत्र भी मीडिया का एक प्रासंगिक स्रोत है?

....

....

....

11.3 ऑनलाइन/आभासी अधिगम

पिछले कुछ दशकों में शिक्षा क्षेत्र में ऑनलाइन और आभासी अधिगम लोकप्रिय हो रही है। उन्हें उच्च शिक्षा प्रणालियों द्वारा मान्यता दी जा रही है क्योंकि वे शिक्षा प्रदान करने और प्रदर्शन में सुधार करने के लिए एक लागत प्रभावी तरीका है। इंटरनेट कनेकटिविटी की तीव्र वृद्धि ने पूरी दुनिया में ऑनलाइन/आभासी आधारित अधिगम प्लेटफार्मों के विकास को प्रेरित किया है। ऑनलाइन या ई-लर्निंग के अवधारणा आभासी अधिगम, वितरित अधिगम और मुक्त स्रोत अधिगम की विभिन्न विशेषताओं का एक संयोजन है। पिछले कुछ दशकों के दौरान भारतीय शिक्षा प्रणाली शिक्षण के पारंपरिक तरीकों पर आधारित थी जहां छात्र और शिक्षक पुस्तकों से प्राप्त ज्ञान पर भरोसा करते थे। लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के तेजी से विकास ने अतिरिक्त डिजीटल प्लेटफार्म बनाकर एक क्रांति ला दी है, जिससे छात्रों और शिक्षकों के लिए संसाधन उपलब्धता में वृद्धि हुई है। इसने शिक्षा को अधिक सुलभ बना दिया है और शिक्षा के क्षेत्र में प्रवृत्तियों से मुकाबला करने के लिए प्रभावी शिक्षण और अधिगम अध्यापन कला को अपनाने के लिए शैक्षिक स्टार्टअप के लिए बहुत सारे अवसर उत्पन्न किये हैं।

इलेक्ट्रॉनिक सेवा वितरण को बढ़ावा देने के लिए एक राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में भारत सरकार द्वारा 2015 में शुरू किये गये **डिजीटल इंडिया अभियान** ने भारत को नाटकीय रूप से बदल दिया है और डिजीटल रूप से सशक्त बना दिया है। पहल के पहुलओं में से एक ***भारत में ऑनलाइन शिक्षा*** को बढ़ावा देना और केवल पुस्तक आधारित शिक्षा पर निर्भरता की बजाए इंटरैक्टिव संलग्नता, भागीदारी और नवाचार पर

जोर देने के साथ शिक्षण को अधिक सर्वांगीण पद्धति प्रदान करना है। अनेक उच्च शिक्षण संस्थान पूरे भारत में छात्रों और शिक्षकों को व्यक्तिगत हुआ और बहुविषयक पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। देश में उच्च शिक्षा के तीन खंड हैं यानि स्नातक स्तर, स्नातकोत्तर स्तर और डॉक्टरेट स्तर। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) केन्द्रिय निगरानाी प्राधिकरण है जो विश्वविद्यालयों को सम्बंधता प्रदान करता है। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (एआईसीईटी), भारतीय चिकित्सा परिषद (एम.सी.आई.) आदि जैसी व्यक्तिगत एजेन्सियाँ भी हैं जो भारत में उच्च शिक्षा के विनियमन, संगठन और विकास के लिए जिम्मेदार हैं। यूजीसी और भारत सरकार के साथ इन नियामक निकायों ने शिक्षा मंत्रालय के माध्यम से उच्च शिक्षा में ऑनलाइन अधिगम को बढ़ावा देने पर जोर देना शुरू कर दिया है। ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल इंडिया अभियान के तहत कई योजनाएं शुरू की गई हैं जिनमें मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स (मूक), स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग और यंग एस्पाइरिंग माइंडस (स्वयं) सूचना संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा फॉर राष्ट्रीय मिशन (एन.एम.ई. आई.सी.टी.), नेशनल डिजीटल लाइब्रेरी, और द फ्री एंड ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर एंड एजुकेशन (एफ.ओ.ओ.एस.ई.) और एनुवल रिफ्रेशर प्रोग्राम इन टीचिंग (अरपित) शामिल हैं।

11.3.1 मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्सेज (मूक)

इसे राष्ट्रीय ज्ञान आयोग द्वारा 2009 में सभी के लिए शिक्षा को सुलभ बनाने के उद्देश्य से विकसित किया गया था। यह इंटरनेट के माध्यम से विभिन्न शोध और शैक्षणिक संस्थानों को जोड़ता है। मूक न केवल शिक्षार्थियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है, बल्कि इससे 2022 तक लगभग 50 करोड़ लोगों के व्यावसायिक और शैक्षिक प्रशिक्षण के उद्देश्य को पूरा करने की अपेक्षा भी है। इसने अपने नवाचारी पाठ्यक्रमों के कारण लोकप्रियता हासिल की है और नाममात्र की फीस के साथ शैक्षिक/ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से बड़ी संख्या में छात्रों को आकर्षित किया है। मूक के ये लाभ हैं:

i) व्यक्ति अपनी नौकरी या अध्यापन (कोई अन्य पाठ्यक्रम) जारी रखते हुए अपनी रुचि के क्षेत्र का अनुसरण कर सकते हैं।

ii) विभिन्न भौगोलिक पृष्ठभूमि के व्यक्ति आकर और बिना किसी भौतिक दूरी की बाधा के मूक में शामिल हो सकते हैं।

iii) मूक किसी विशेष क्षेत्र या डोमेन में आवश्यक कौशल को कुशाग्र बनाने में सहायक हो सकते हैं।

iv) मूक आपको ''स्व-अधिगम'' की अवधारणा को पहचानने और स्वीकार करने में सहायक होते है।

मूक की ये हानियां है:

i) वे एक शिक्षार्थी और प्रशिक्षक के बीच आमने-सामने अन्तःक्रिया प्रदान करने में विफल रहते हैं जिसके बहुत सारे लाभ होते हैं।

ii) ये स्व-प्रेरित पाठ्यक्रम हैं इसलिए पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए आन्तरिक अभिप्रेरणा की आवश्यकता होती है।

iii) वे पारपंरिक कक्षा शिक्षण वातावरण को कभी भी प्रतिस्थापित नहीं कर सकते।

iv) वे कक्षा के वातावरण की तरह अन्तःक्रियात्मक नहीं हो सकते।

v) मूक उन पाठ्यक्रमों के लिए सर्वोत्तम नहीं है जहाँ प्रयोग के लिए प्रयोगशालाओं की आवश्यकता होती है।

11.3.2 स्वयम

स्वयम (स्टडी वेबस ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पांइरिग माइंडस), माइक्रोसॉफ्ट की मदद से शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (AICTE) द्वारा शुरू किया गया एक कार्यक्रम है। इसका लक्ष्य उन छात्रों के लिए डिजिटल विभाजन को पाटकर सभी लोगों को सर्वोत्तम शिक्षण अधिगम संसाधन प्रदान करना है जो पहले भारत में डिजीटल क्रांति से अछूते रहे हैं। यह मंच शिक्षा नीति के तीन सिद्धांतों को पूरा करने के डिजाइन किया गया है जो पहुँच, गुणवत्ता और समान हैं। प्रदान किये जाने वाले पाठ्यक्रमों में स्कूल स्तर, स्नातक, स्नातकोत्तर और अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रम शामिल हैं और ये निःशुल्क हैं। इसके अलावा, लोग पाठ्यक्रम पूरा होने पर प्रमाणन और क्रेडिट का विकल्प भी चुन सकते हैं। पाठ्यक्रम प्रकृति में अन्तःक्रियात्मक हैं और उन्हें पूरे भारत में एक हजार से अधिक शिक्षकों द्वारा तैयार किया गया है। स्वयम पर आयोजित किये गये पाठ्यक्रम चार चतुर्थी भाग दृष्टिकोण का उपयोग करके ई-सामग्री की स्मार्ट डिलीवरी प्रदान करते हैः

i) वीडियो व्याख्यान

ii) विशेष रूप से तैयार की गई पठ्न सामग्री जिसे डाउनलोड/मुद्रित किया जा सकता है,

iii) प्रश्नोत्तरी, नियत कार्य और टेस्ट के माध्यम से स्व-मूल्यांकन परीक्षण, और

iv) शंकाओं को दूर करने के लिए एक ऑनलाइन चर्चा मंच।

ई-लर्निंग को प्रोत्साहित करने के लिए एक और सबसे अधिक लागत प्रभावी साधन स्वयं प्रभा है जिसमें 34 शैक्षणिक चैनलों का एक समुच्चय है जो पूरे देश में डीटीएच सेवाओं (डायरेक्ट टू होम) के माध्यम से कार्य करता हैं। ये चैनल जी सेट-15 उपग्रह के माध्यम से शैक्षिक कार्यक्रमों के 24×7 के आधार पर प्रसारण के लिए समर्पित हैं क्योंकि इनका उद्देश्य स्वयंप्रभा चैनलों का उपयोग करने वाले छात्रों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक कार्यक्रमों में उपलब्ध कराना है।

11.3.3 सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा का राष्ट्रीय मिशन

यह उच्च शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके उच्च गुणवत्ता वाले अन्तः क्रियात्मक पाठ्यक्रम मॉडयूल प्रदान करने के लिए शिक्षा मन्त्रालय द्वारा केन्द्र द्वारा प्रायोजित योजना है। एनएमईआईसीटी (NMEICT) के ये लक्ष्य हैः

i) सामग्री का निर्माण

ii) शोध और विकास के लिए कम लागत वाली पहुँच, और

iii) उच्च शिक्षा संस्थानों में ई-लर्निंग सुविधाएं प्रदान करना।

एनएमईआईसीटी कौशल में अन्तर को पाटकर प्रौद्योगिकी तक एकल खिड़की पहुंच प्रदान करके देश के हर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों तक पहुँचने का प्रयास कर रहा है। ई-सामग्री उस कार्यक्रम पर आधारित है जिसमें मानविकी, सामाजिक विज्ञान, ललितकला और प्राकृतिक विज्ञान के सभी विषय शामिल हैं। मिशन ने कुछ प्रोजेक्ट शुरू किये जैसे साक्षत, स्पोकन टयूटोरियल, टॉक टू ए टीचर, विद्या मित्र, ए-व्यू, ई-यंत्र, वर्चुअल लैबस, और फोसी।

i) **साक्षतः** यह एक सामग्री सलाहकार समिति द्वारा प्रबन्धित किया जाता है और इसमें इग्नू, दिल्ली विश्वविद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नवोदय विद्यालय संगठन, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) के प्रतिनिधि शामिल हैं। इसे 2006 में शुरू किया गया था और इसमें एक संघ है (ई-बुक्स, ई-जर्नल, डिजिटल संग्रह, ओपन सोर्स मैटीरियल के साथ डिजिटल लाइब्रेरी), वर्चुअल क्लास, स्पोकन ट्यूटोरियल, ए -क्यू, टॉक टू ए टीचर, विद्या मित्र, ई-यंत्र, वर्चुअल लैबस, फोसी और स्वयंप्रभा है।

ii) **स्पोकन ट्यूटोरियलः** यह एक शैक्षिक पोर्टल है जो विभिन्न भारतीय भाषाओं में मुफ्त और मुफ्त स्रोत सॉफ्टवेयर (FOSS) परमिट प्रदान करता है। यह शिक्षा के लिए सूचना प्रौद्योगिकी साक्षरता को प्रोत्साहन देने और देश की रोजगार क्षमता का विकसित करने के लिए एनएमईआईसीटी के तहत् बॉम्बे आईआईटी की एक पहल है।

iii) **टॉक टू ए टीचरः** एनएमईआईसीटी के तह आई आई टी बॉम्बे द्वारा एक और पहल है जिसके माध्यम से छात्र आईआईटी बॉम्बे में प्रोफेसरों द्वारा पढ़ाये जाने वाले इन्जीनियरिंग पाठ्यक्रमों में उपस्थित हो सकते हैं। इस पहल का उद्देश्य छात्रों को मुफ्त, से गुणवत्ता पूर्ण इंजीनियरिंग शिक्षा प्रदान करना है। कक्षाओं को रिकॉर्ड किया जाता है और फिर इस पोर्टल के माध्यम से पेश किया जाता है।

iv) **ए-व्यूः** अमृता वर्चुअल इंअरऐक्टिव ई-लर्निंग वर्ल्ड (ए-व्यू) को अमृता यूनिवर्सिटी द्वारा एनएमईआईसीटी के तहत आईआईटी बॉम्बे के साथ विकसित किया गया है। यह एक सहभागिता एक मल्टी-मोडल ई-लर्निंग प्लेटफार्म है जो दृश्य-श्रव्य स्ट्रीमिंग का समर्थन करता है ताकि शिक्षक छात्रों के साथ अन्तःक्रिया कर सकें। यह मुफ्त, मुक्त और व्हाइट बोर्ड विकल्प के साथ बनाया गया है और टु-डी और थ्री-डी एनीमेशन प्रदान करता है जो शिक्षार्थी को वास्तविक जीवन जैसा वास्तविक अनुभव दे सकता है।

v) **फोसीः** शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और शैक्षणिक संस्थानों में पंजीकृत सॉफ्टवेयर पर निर्भरता को कम करने के लिए यह शिक्षा में मुफ्त और ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर है जो आईआईटी बॉम्बे की एक पहल है। उपलब्ध फोसी स्काई लैब, पाइथोन, एस ऐम, ओ सडाग, DWSIM, ओपन फोम, ओपन मोडेलिका, ओआरटूल्स, ओपन पीएलसी, आर आदि शामिल हैं।

11.3.4 राष्ट्रीय इलेक्ट्रानिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान

यह इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार के तहत एक स्वायत् वैज्ञानिक सोसाइटी है। इसका लक्ष्य सूचना, इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उद्योग प्रमुख गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करना है। यह एडवांस डिप्लोमा, एमसीए समकक्ष और एम टेक स्तर के पाठ्यक्रमों के माध्यम से सूचना प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह सूचना प्रौद्योगिकी साक्षरता पाठ्यक्रम जैसे कंप्यूटर कान्सेप्ट, बेसिक कंप्यूटर कोर्स और अनौपचारिक क्षेत्र में, राज्य विश्वविद्यालयों के सहयोग से इन्फारमेशन सिक्योरिटी, आईटीसीएस-बीपीओ (ग्राहक सेवा/बैकिंग), कंप्यूटर हार्डवेयर के रखरखाव, जैव–सूचना विज्ञान और इलेक्ट्रानिक्स डिजाइन और प्रौद्योगिकी आदि।

11.3.5 नेशनल डिजीटल लाइब्रेरी

यह विभिन्न स्वरूपों में बड़ी मात्रा में शैक्षणिक सामग्री के ई-संसाधनों का एक डिजिटल संग्रह है, जिसे बहुभाषी सामग्री लेने के लिए डिजाइन किया गया है जो शैक्षणिक स्तरों और विषयों पर छात्रों की सेवा करता है। इस परियोजना का लक्ष्य एकल एक्सेस विंडो प्रदान करना है जो दुनिया में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालयों को जोड़ता है। यह छात्रों को ई-बुक्स, ऑडियो बुक्स, भाषण सामग्री, थीसिस, रिर्पोटस, लेख, जर्नल, प्रश्नपत्र और उनके हल, सिमुलेशन टूल्स और वीडियो लेक्चरस, के रूप में विभिन्न विषयों में संसाधनों और सामग्री को लागत प्रभावी और सुविधाजनक तरीके से उपलब्ध कराती है। यह विशेष रूप से कोविड-19 के दौरान बेहद मददगार रही है क्योंकि इसने यह सुनिश्चित करके एक प्रतिमान को बदला है कि प्रत्येक नागरिक ज्ञान संसाधनों की उपलब्धता के माध्यम से तकनीकी रूप से सशक्त हो जाए।

11.3.6 शिक्षण में वार्षिक रिफ्रेशर कार्यक्रम

यह एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम है जिसकी योजना विश्वविद्यालय संकाय के व्यवसायिक विकास को समृद्ध करने के लिए बनाई गई है। प्रशिक्षण सामग्री स्वयम एप्लीकेशन के माध्यम से प्रसारित की जाती है और कार्यक्रम शिक्षा क्षेत्र में उभरते सुझावों, शैक्षणिक संस्थानों द्वारा अपनाए गए नवीनतम अध्यापन व्यवहारों और पाठ्यक्रम विकास पर प्रशिक्षण सत्रों पर केन्द्रित हैं। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र (एनआरसी) द्वारा विश्वविद्यालयों के अकादमिक संकाय के कैरियर विकास को सुनिश्चित करने के लिए विकसित किया गया है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 4

1) एनएमईआईसीटी की पहलों की सूची बनाएं।

....

....

....

2) स्वयम एप्लीकेशन डाउनलोड करें और उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं का पता लगाएं।

....

....

....

3) मूक के क्या लाभ और हानियां है?

....

....

....

4) शैक्षणिक संसाधनों, संग्राहकों और अन्य आईटी पहलों को उनकी वेबसाइटों पर जाएं और उनका अन्वेषण कीजिए।

....

....

THE PEOPLE'S UNIVERSITY

11.4 मोबाइल एप्लीकेशन्स

मोबाइल एप्लीकेशन प्रासंगिक सूचना और ज्ञान प्रदान करने में मदद करते हैं जिसे व्यक्तिगत आवश्यकता के अनुसार ढाला जा सकता है। भारत सरकार की एजेन्सियों द्वारा विकसित कुछ मोबाइल एप्लीकेशन का वर्णन नीचे किया गया है:

11.4.1 ई-पाठशाला

ई-पाठशाला को एनसीईआरटी को शिक्षा मंत्रालय द्वारा विकसित किया गया है जिसका उद्देश्य सभी के लिए समान, गुणवत्तापूर्ण, समवेशी शिक्षा और आजीवन सीखने की पेशकश और डिजीटल विभाजन को पाटकर दीर्घकालिक टिकाऊ विकास को प्राप्त करना है। यह अनुप्रयोग छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों को पाठ्य पुस्तक, ऑडियो, वीडियो, पत्रिका और अन्य डिजीटल संसाधनों सहित शैक्षिक संसाधन उपलब्ध कराता है। इस उपयोक्ता मैत्रीपूर्ण (यूजर-फ्रेंडली) का उपयोग मोबाइल, लैपटॉप, टेबलेट के माध्यम से किया जा सकता है और इसमें ऐसी विशेषताएँ है जैसे ई-बुक्स में उपयोगकर्ता करने, चयन करने, जूम करने, बुक मार्क करने, हाइलाइट करने, नेवीगेट करने, साझा करने, टेक्सट सुनने और टेक्सट टू स्पीच एप्लीकेशन का उपयोग करने की अनुमति होती है ताकि उपयोगकर्ता डिजीटल रूप से नोट्स बना सकें।

11.4.2 स्वयम ऐप

जैसा कि पिछले खंड में वर्णन किया है, इस एप्लीकेशन में शिक्षक और छात्र के लिए मुफ्त में बड़ी मात्रा में शैक्षिक संसाधन हैं। इस तक कहीं भी और कभी भी पहुँचा जा सकता है।

11.4.3 इग्नू स्टूडेन्ट ऐप

इग्नू स्टूडेन्ट ऐप इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली का एक आधिकारिक मोबाइल ऐप है, जो छात्रों को उनके अध्ययन के विभिन्न पहलूओं पर सूचना और प्रशासनिक सूचना देता है जैसे, पंजीकरण विवरण, सामग्री की डाक की स्थिति, पहचान पत्र, ग्रेड कार्ड, हॉल टिकट, आदि। यह स्वशिक्षण सामग्री के साथ कई अन्य महत्वपूर्ण लिंक भी देता है।

11.5 शिक्षा के सन्दर्भ में उपयोग की जाने वाली तकनीक और मीडिया पर फिर से ध्यान केन्द्रित करना

किसी भी पाठ्यक्रम का सार अधिगम की गतिविधियों का संगठन है जो छात्रों को कुछ अधिगम के परिणाम तक पहुंचने की अनुमति देता है। इसका कोई अनुठा नुस्खा नहीं है और कोई यह गारंटी नहीं दे सकता है कि कौन सा मीडिया सबसे कमजोर रहेगा, कौन सा ऑनलाइन पाठ्यक्रम अधिक प्रभावी होगा। लेकिन यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि जो कुछ भी वर्णन किया जा रहा है और संप्रेषित किया जा रहा है (मीडिया या उपयोग किये जा रहे मंच से) वह छात्रों के लिए पर्याप्त स्तर की कठिनाई वाला हो और उसे सटीक और स्पष्ट तरीके से प्रस्तुत किया जाए। यह उनके संदर्भ से संबंधित होना चाहिए क्योंकि यह अधिगम को अधिक प्रासंगिक और आकर्षक बनाता है। एक ठोस अधिगम उद्देश्य को लक्ष्य साधने वाले इन घटकों में से कुछ की चित्र 11.1 में चर्चा की गई है। ये सभी ऑनलाइन शिक्षण/अधिगम, के संबंध में, विशेषकर कोविड-19 जैसी स्थिति के दौरान, अधिक सहायक और महत्वपूर्ण हैं। मुख्य घटक इस प्रकार हैं (रास्पता तथा अन्य, 2020):

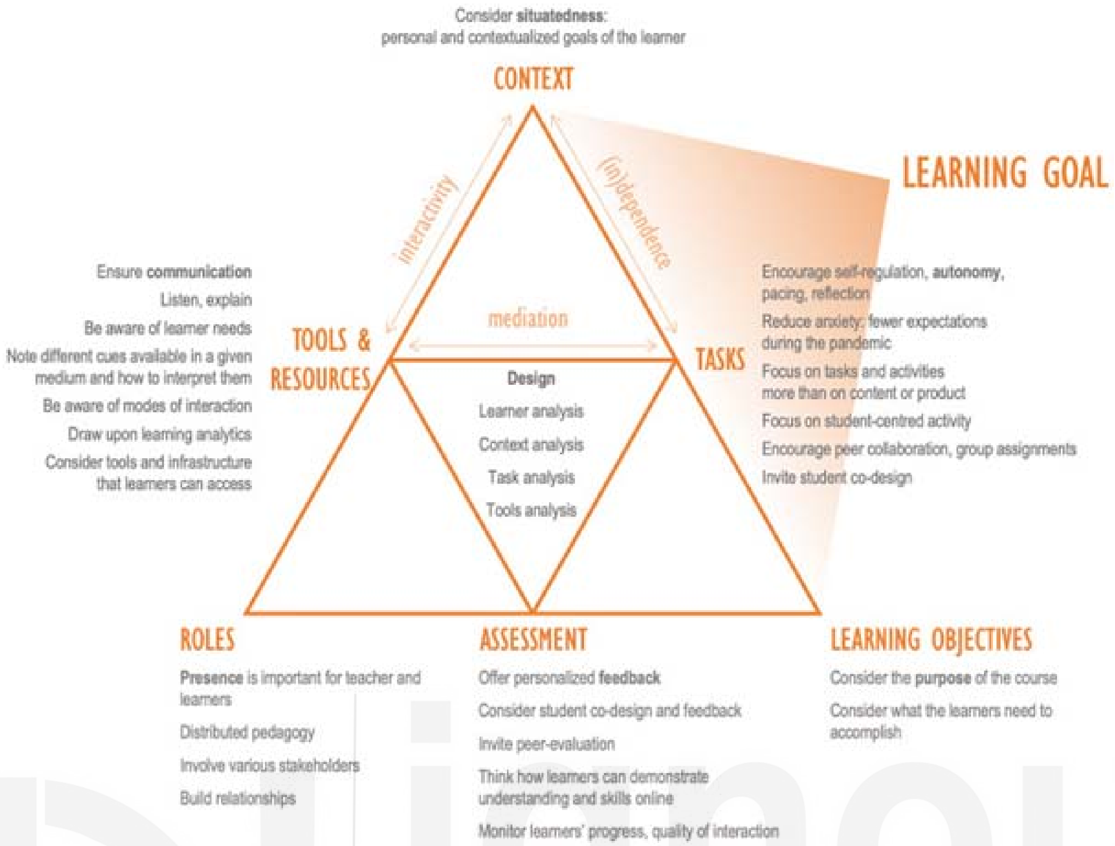

चित्र 11.1 यर्थाथपूर्ण सीखने के लक्ष्य के घटक

स्रोत: Rapanta, C., Botturi, L., Goodyear, P., Guàrdia, L., &Koole, M. (2020). Online university teaching during and after the Covid-19 crisis: Refocusing teacher presence and learning activity. *Postdigital Science and Education, 2*(3), 923-945

- **संदर्भ:** शिक्षार्थी के लक्ष्य, शिक्षार्थी, शिक्षक और समाज की विश्व दृष्टि में सब कुछ स्थित करके देखना।
- **उपयोग किये गये उपकरण और संसाधन:** शिक्षार्थियों और शिक्षकों के बीच, स्वयं शिक्षार्थियों के बीच संचार के मार्ग, पिन माध्यमों का उपयोग किया जा रहा है।
- **ठोस कार्य:** सहकर्मी सहभागिता को प्रोत्साहित करना, यह तय करना कि कौन सी गतिविधियां की जानी हैं आदि।
- **उपरोक्त तीनों के बीच संबंध:** व्यक्ति के दिये गये संदर्भ में उपकरण कितने अन्त:क्रियात्मक हैं या शिक्षक के लिए इन संसाधनों की मध्यस्थता करना कितना आवश्यक है।

11.6 सारांश

आइये इस इकाई में हमने जो सीखा है, उसे सारांशित करें:

- जनसंचार माध्यमों की उन्नति ने देश के शिक्षा के क्षेत्र को बहुत लाभान्वित किया है क्योंकि वे सस्ती हैं और उपयोग में आसान और प्रचलित है। स्थानीय, राज्य स्तरीय और वैश्विक मामलों के बारे में जागरूकता और ज्ञान फैलाने के बारे में अपनी क्षमता साबित कर चुकी हैं।
- लोगों को शिक्षित करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों मं इलेक्ट्रोनिक मीडिया का गहरा प्रभाव है।

- टेलीविजन देखना कल्पना को वास्तविकता से विभेदित करने में सहायक होता है और जब वे एक काल्पनिक कहानी और एक वास्तविक कहानी के बीच विभेद कर सकते हें।
- टेलीविजन देखने का बच्चों पर शैक्षिक प्रभाव पड़ता है क्योंकि यह उनके संज्ञानात्मक, सोच के प्रारूप और अधिगम की क्षमता को प्रभावित कर सकता है।
- समाचार पत्र, लेख, पत्रिकायें और पुस्तकें ऐसे माध्यम हैं जो प्रमाणिक और सत्यापित सूचना प्रदान करते हैं।
- प्रिन्ट मीडिया, बच्चों की पढ़ने और लिखने की क्षमता की बढ़ाने में सहायक है।
- बच्चों के लिए डिजीटल मीडिया प्लेटफार्म का उपयोग करते समय शिक्षकों को सतर्क रहना चाहिए।
- ऑनलाइन शिक्षा, शिक्षा में एक नई प्रेरक शक्ति है क्योंकि यह आजीवन अधिगम को प्रोत्साहित करती है।
- डिजीटल मीडिया और सोशल मीडिया ने अधिगम के नये तरीकों को आजमाने का अवसर प्रदान किया है।
- स्वयम, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा पर राष्ट्रीय मिशन, राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक और सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय डिजीटल लाइब्रेरी, अरपित, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की कुछ ऑनलाइन पहल है।
- भारत सरकार ने विभिन्न प्रकार के शैक्षिण संसाधनों को डिजीटल रूप में उपलब्ध कराने की पहल की है ताकि वे कहीं से भी और कभी भी सुलभ हो सके।

11.7 मुख्य शब्द

निर्देशात्मक वीडियो : किसी विशेष विषय को पढ़ाने के लिए डिजाइन किया गया कोई भी वीडियो, उदाहरण के लिए, केआईसीडी से एक निर्देशात्मक डीवीडी या यहाँ तक कि यू-ट्यूब जैसी साइटों से डाउनलोड की गई डीवीडी।

ऑनलाइन अधिगम : एक नेटवर्क से जुड़े रहने के लिए कंप्यूटर, लैपटॉप या मोबाइल का उपयोग करने की क्षमता जो कहीं से भी और कभी भी सीखने में मदद करती है।

शिक्षा में प्रिन्ट मीडिया : एक विश्वव्यापी एजेन्डा है जिसके द्वारा कक्षाओं में छात्रों को शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का उपयोग किया जाता है।

प्रिन्ट-मीडिया : सार्वजनिक मत को आकार देने और प्रभावित करने वाले समाचार पत्र, पुस्तकें और लेख इसमें शामिल होते हैं।

शिक्षण सहायक सामग्री : इसे तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है जो मुद्रित, दृश्य और श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री हैं जो शिक्षण के वातावरण में सहायक है।

दृश्य अधिगम : जहाँ छात्र छवियों के माध्यम से सीखते हैं।

यू-टयूब : एक वेबसाइट जिसमें विभिन्न वीडियो होते हैं जिन्हें उपयोगकर्ता डाउनलोड कर सकते हैं, उदाहरण के लिए, कार्टून एनीमेशन, समाचार क्लिप्, वृत्त चित्र और वीडियो।

11.8 पुनरावलोकन प्रश्न

1) शैक्षिक अवसरों को मजबूत बनाने में पारंपरिक और डिजीटल मीडिया की शक्ति पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
2) आपदा, स्वास्थ्य संबंधी सूचना, या सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल जैसे महत्वपूर्ण विषयों के बारे में जागरूकता फैलाने में मीडिया कैसे सहायक है?
3) इंटरनेट की मीडिया प्रकृति क्या है जो व्यक्ति की सूचना के विकल्प को कम करती है?
4) निम्नलिखित पर चर्चा कीजिए :
   क) डिजिटल विभाजन के कारण मीडिया प्लेटफार्म से ज्ञान और सूचना प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न होती है।
   ख) डिजिटल प्लेटफार्म अनुमानी सूचित महसूस होने के स्वानुभविक को बढ़ाते हैं।
   ग) मीडिया प्लेटफार्म सूचित होने के एक 'गलत स्वानुभाविक निष्कर्ष' को बढ़ावा देते हैं।
5) दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री के क्या लाभ और हानियाँ हैं?
6) बच्चों पर टेलीविजन के प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।
7) यू-ट्यूब ने कक्षाओं को कैसे बदला है?
8) वीडियो और ऑडियो-विजुअल उपकरणों का उपयोग करके कक्षा शिक्षण को और अधिक रोचक बनाने के लिए विभिन्न तरीकें क्या है?
9) ऑनलाइन/आभासी अधिगम ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को बदल दिया है पर चर्चा कीजिए।
10) डिजिटल इंडिया अभियान द्वारा शुरू की गई योजनाओं का उल्लेख कीजिए।

11.9 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

Boukes, M. (2019). Social network sites and acquiring current affairs knowledge: The impact of Twitter and Facebook usage on learning about the news. *Journal of Information Technology & Politics*, *16*(1), 36-51.

Boulianne, S., & Theocharis, Y. (2020). Young people, digital media, and engagement: A meta-analysis of research. *Social Science Computer Review*, *38*(2), 111-127.

Carter, R. , (2002)Applied Linguistic Perspectives .Vocabulary: Vocabulary. 3rd. Ed. London: Taylor and Franci

Dimitrova, D. V., Shehata, A., Strömbäck, J., & Nord, L. W. (2014). The effects of digital media on political knowledge and participation in election campaigns: Evidence from panel data. *Communication research*, *41*(1), 95-118.

Downes, J. M., & Bishop, P. (2012). Educators engage digital natives and learn from their experiences with technology: Integrating technology engages students in their learning. *Middle School Journal*, *43*(5), 6-15.

Eveland Jr, W. P., & Scheufele, D. A. (2000). Connecting news media use with gaps in knowledge and participation. *Political Communication*, *17*(3), 215-237.

Fraile, M., & Iyengar, S. (2014). Not all news sources are equally informative: A cross-national analysis of political knowledge in Europe. *The International Journal of Press/Politics*, *19*(3), 275-294.

Hargittai, E., Piper, A. M., & Morris, M. R. (2019). From internet access to internet skills: digital inequality among older adults. *Universal Access in the Information Society*, *18*(4), 881-890.

Heinonen, K. (2011). Consumer activity in social media: Managerial approaches to consumers' social media behavior. *Journal of Consumer Behaviour*, *10*(6), 356-364.

June, S., Yaacob, A., & Kheng, Y. K. (2014). Assessing the use of YouTube videos and interactive activities as a critical thinking stimulator for tertiary students: An action research. *International Education Studies*, *7*(8), 56-67.

Kreutzer, T. (2009). Generation mobile: online and digital media usage on mobile phones among low-income urban youth in South Africa. *Retrieved on March*, *30*(2009), 903-920.

Krijnen, T., & Meijer, I. C. (2005). The moral imagination in primetime television. *INTERNATIONAL journal of CULTURAL studies*, *8*(3), 353-374.

Kruikemeier, S., Lecheler, S., & Boyer, M. M. (2018). Learning from news on different media platforms: An eye-tracking experiment. *Political Communication*, *35*(1), 75-96.

Kumar, A., Kaviani, M. A., Bottani, E., Dash, M. K., & Zavadskas, E. K. (2018). Investigating the role of social media in polio prevention in India: a Delphi-DEMATEL approach. *Kybernetes*.

Nadji, A. (2016). *The Impact of the Implication of Audio-Visual Aids on Students' Grammar Learning. A Case study of Second Year Students of English at Mohamed Kheider University of Biskra* (Doctoral dissertation).

Oyesola, G. O. (2010). Criteria for Selecting Audio-Visual Materials in Geography Teaching in Post Primary Institution. *Retrieved February*, *5*.

Rapanta, C., Botturi, L., Goodyear, P., Guàrdia, L., & Koole, M. (2020). Online university teaching during and after the Covid-19 crisis: Refocusing teacher presence and learning activity. *Postdigital Science and Education*, *2*(3), 923-945

Shehata, A., Hopmann, D. N., Nord, L., & Höijer, J. (2015). Television channel content profiles and differential knowledge growth: A test of the inadvertent learning hypothesis using panel data. *Political communication*, *32*(3), 377-395.

Subrahmanyam, K., & Smahel, D. (2010). *Digital Youth: The Role of Media in Development*. Springer Science & Business Media.

Tewathia, N., Kamath, A., & Ilavarasan, P. V. (2020). Social inequalities, fundamental inequities, and recurring of the digital divide: Insights from India. *Technology in Society*, *61*, 101251.

Valdivia, A. N., Anderson, D. R., Lavigne, H. J., & Hanson, K. G. (2012). The Educational Impact Of Television. *Int. Encycl. Media Stud*.

Woo-Yoo, S., & Gil-de-Zúñiga, H. (2014). Connecting blog, Twitter and Facebook use with gaps in knowledge and participation. *Communication & Society*, *27*(4), 33-48.

Zillien, N., & Hargittai, E. (2009). Digital distinction: Status-specific types of internet usage. *Social Science Quarterly*, *90*(2), 274-291.

11.10 अतिरिक्त ऑनलाइन संसाधन

- *The Role of Social Media in Education*
  https://www.youtube.com/watch?v=_gEUeEGqkrk
- *Audio Visual Aids in Teaching*
  https://www.youtube.com/watch?v=djQWR7xvAgU
- *Media and Information Literacy: Evolution of Media*
  https://www.youtube.com/watch?v=alPvlbaWSRM
- Virtual Education During Pandemic
  https://www.youtube.com/watch?v=9462s8j9kSY
- *India HRD UGC Initiatives for Online Learning During Covid-19 Lockdown*
  https://www.youtube.com/watch?v=0qBbIPoku3Y

IGNOU SOCIAL MEDIA

QR Code generated for quick access by Students
IGNOU website
eGyankosh
e-Content APP
Facebook (@offical Page IGNOU)
Twitter (@ Offical IGNOU)
Instagram (official page ignou)

QR Code -website ignou.ac.in

QR Code -e Content-App

QR Code - IGNOU-Facebook (@OfficialPageIGNOU)

QR Code Twitter Handel (OfficialIGNOU)

INSTAGRAM (Official Page IGNOU)

QR Code -e Gyankosh-site

Like us, follow-us on the University Facebook Page, Twitter Handle and Instagram

To get regular updates on Placement Drives, Admissions, Examinations etc.

MPDD/IGNOU/P.O. 6.3K/May, 2022

BPCG-174

मनोविज्ञान और मीडिया

ISBN : 978-93-5568-032-7